अष्टछाप के महत्वपूर्ण कवि का जीवन-वृत्त

अष्टछाप के महत्वपूर्ण कवि होने के बावजूद आचार्य नंददास का प्रामाणिक जीवन-वृत्त अभी तक पूर्णतया प्रकाश में नहीं आ सका है। साहित्य अकादेमी द्वारा भारतीय साहित्य के निर्माता श्रृंखला के तहत प्रकाशित यह विनिबंध कुछ हद तक उस अभाव की पूर्ति करता है।

नंददास वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथजी के शिष्य थे और उनके प्रति पूरी निष्ठा से समर्पित थे। वे पुष्टिमार्गी कृष्णभक्त थे। रसमंजरी, विरहमंजरी, रूपमंजरी, मानमंजरी, रास पंचाध्यायी आदि कृतियों में नंददास की रसिक प्रवृत्ति की झलक मिलती है, जो आगे चलकर उनके कृष्ण-प्रेम को प्रगाढ़ करने में मददगार साबित हुई। चिंतनशीलता और वैचारिकता के आग्रह ने उनके कवि-व्यक्तित्व में तार्किकता को सम्मिलित कर दिया था। उनकी प्रतिभा नवोन्मेषशालिनी थी। संस्कृत और ब्रजभाषा दोनों में उनकी समान गति थी। उनके सौष्ठवपूर्ण शब्द-चयन और भाषिक सौंदर्य के ही कारण उनके बारे में यह प्रसिद्ध है- और कवि गढ़िया नंददास जड़िया, यानी जहां बाक़ी के कवि गढ़ते थे, वहीं नंददास रत्नों की तरह शब्दों को जड़ते थे। वास्तव में महाकवि सूरदास के बाद कृष्णभक्ति धारा के काव्य को जो उत्कर्ष नंददास द्वारा प्राप्त हुआ, उसका श्लाघनीय महत्व है। उन्हें सुदामा चरित, रुक्मिणी मंगल, रास पंचाध्यायी, गोवर्धन लीला, नंददास पदावली आदि ग्रंथों के लिए जाना गया। ऐसे उल्लेखनीय कवि-व्यक्तित्व पर मात्र 50 रुपयों में 136 पृष्ठों का यह विनिबंध प्रकाशित कर साहित्य अकादेमी ने हिंदीसेवा की है। पुस्तक के सात अध्यायों, परिशिष्ट, संदर्भ-ग्रंथ, जीवन-परिचय आदि सामग्रियों में नंददास के बारे में वह सब संजोया गया है, जो उनके बारे में जाना जाना चाहिए। लेखक व्यास मणि त्रिपाठी का हिंदी के भक्ति-साहित्य पर अधिकार भी यहां विशेष द्रष्टव्य है।

साहित्य अकादेमी / नंददास / व्यास मणि त्रिपाठी / 50 रुपए

अद्भुत रचना संसार से परिचय की ज़मीन

ओड़िया लोकसंस्कृति, यहां के सामाजिक परिवेश और जनसामान्य के मन को टटोलने, जानने का अवसर इस अनूठे संकलन की कहानियों से मिलता है। साथ ही कथा शिल्प के एक नए ही आयाम से भी पाठकों का परिचय इस पुस्तक के माध्यम से होगा।

जिन समस्याओं से हमारा समाज ग्रसित है, उनकी पृष्ठभूमि या विषयवस्तु पर लिखी कहानियां भी कैसे अनजाने मोड़ ले सकती हैं, इसकी मिसाल विभूति पट्टनायक की कहानियों में देखी जा सकती है। वहीं लेखक का अपना एक सृजन संसार होता है, जहां से उसकी नज़र से दुनिया, हालात ही नहीं, वस्तुओं को देखने से भी वे नई मालूम होती हैं। विभूति बाबू की कहानियों की विशेषता यह भी है कि इनके आरंभ के पात्रों में से किस पात्र की कहानी आगे बढ़ेगी और किन रास्तों से गुज़रकर कहां पहुंचेगी, इसका अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता। साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित इस पुस्तक की 26 कहानियों से बमुश्किल तीन-चार ही ऐसी होंगी, जो छह-सात पन्नों तक गई होंगी। शेष सभी तीन-चार पन्नों की ही हैं। इन सबका शिल्प हैरतअंगेज़ है। पत्र लेखिका, नाटक का अंतिम दृश्य, खलनायक, केशवती कन्या और यूथबद्ध यीशू इसका उदाहरण हैं। बाढ़ से उपजे हालात ग़रीब के घर में क्या कहर ढाते हैं, इसका आशा की अशांत नदी और भूख नामक कहानियों में तो रोंगटे खड़े कर देने वाला ब्योरा है। दिनेश कुमार माली का अनुवाद ओडिशा की ख़ुशबू को बरक़रार रखने में कामयाब रहा है। यह संकलन एक नए रचना-संसार से रूबरू होने का अवसर हिंदी के पाठकों को देता है। इस कृति का रसास्वादन करने का अवसर उन्हें चूकना नहीं चाहिए।

साहित्य अकादेमी / महिषासुर का मुंह / विभूति पट्टनायक / 160 रुपए